जीवन का स्वर्ण काल – युवा काल

1– विकारों की कालिमा से दूर, दुनियादारी के झंझटों से परे, मतलबी, फरेबी, भ्रष्टाचारियों के चंगुल से मुक्त, हताशा, निराशा, उदासी की छाया से परे, हिंसा, कठोरता, कुटिलता व जड़ता से कोसों दूर, आनन्द से भरपूर, एक सच्चा इनोसेन्ट जीवन, बचपन को कहा जा सकता है व सचमुच में ऐसा ही है कई लोग इन्हीं विशेषताओं को देखकर जब दुखी होते हैं तो कहते हैं कि मेरा सब कुछ कोई ले लें और मेरा बचपन वापस ला दे या बचपन के दिन भी क्या दिन थे! आदि-आदि। पर हम तो समझते हैं यह भी एक स्वार्थ है क्योंकि बचपन सिर्फ अपने लिए होता है इसलिए अपने लिए तो ठीक कहा जा सकता है क्योंकि इस उम्र में हम कोई पाप नहीं करते हमें कोई दुख भी फील नहीं होता हम किसी से नफरत व घृणा, ईर्ष्या भी नहीं करते। ये अच्छी ही नहीं किन्तु अति उत्तम बात है परन्तु बचपन दूसरों पर आश्रित होता है हम समाज का, माँ-बाप का कुछ कर्ज अदा करें, अपना फर्ज निभायें ऐसा भी नहीं होता। किसी के दु:ख में सहयोगी बनें, किसी को सुख दें किसी की मदद कर सके ऐसा भी बचपन में नहीं होता।

2– लोग कहते हैं कि बचपन सबसे अच्छा होता है ठीक बात है किसी एक दृष्टिकोण से अगर देखा जाये तो बचपन निस्संदेह अच्छा होता है, बिना कोई तपस्या के लोग बचपन को महात्माओं से भी अच्छा मानते हैं क्योंकि बचपन में बुराइयों का भी ज्ञान नहीं होता परन्तु अगर देखा जाये तो अच्छाइयों का भी ज्ञान नहीं होता जिससे दिनोंदिन उन अच्छाइयों का सुख भोगने के कारण उसका खाता कम होता जाता है इस तरह हम देख सकते हैं बचपन सिर्फ खर्च करने का समय होता है जहाँ पर हम अपनी कमाई पाप के खाते में बर्बाद नहीं कर रहे हैं पर खा तो रहे हैं और कोई पुण्य करके जमा भी तो नहीं कर रहे हैं इसलिए कम ही होता जाता है।

3– लेकिन युवाकाल वह स्वर्णिम काल है जिसमें हम जितना चाहे उतना जमा कर सकते हैं। जैसे भूत और भविष्य हमारे हाथ में नहीं होता है परन्तु वर्तमान के आधार से भूत और भविष्य दोनों को सुधारा जा सकता है। जिस प्रकार वर्तमान अगर सफल करे तो वो लम्बा होता है, नहीं तो वर्तमान सिर्फ एक पल ही होता है, क्षण भर पहले भविष्य था, क्षण भर बाद भूत बन जायेगा। इसी प्रकार युवाकाल को श्रेष्ठ बनाये तो बचपन व वृद्धावस्था दोनों ही ठीक हो जाते हैं।

4– अगर हम इतिहास का अवलोकन करे तो उसमें कुछ अपवादों को छोड़ दें तो जितनी भी क्रांतियां हुई, कुछ अलग हटकर हुआ, कुछ विश्व विख्यात परिवर्तन हुआ तो वह युवाओं ने ही कर दिखाया। अगर किसी ने जीवन के चौथे दौर में भी किया तो भी उसका बीज अर्थात संकल्प युवाकाल में ही लिया गया था, कार्य विराट होने के कारण सम्पूर्ण होते होते युवाकाल बीत गया। चाहे वो धर्म क्षेत्र हो या कर्मक्षेत्र अर्थात सामाजिक कार्यक्षेत्र या आजादी की लड़ाई हो या फिर विज्ञान का क्षेत्र हो या खेल जगत हो, सभी क्षेत्रों में युवाओं का कोई सानी नहीं रहा, क्रांतिकारियों का एवं खेल जगत का सारा का सारा क्षेत्र ही युवा जीवन पर निर्भर होता है। विवेकानंद, शंकराचार्य, महात्मा बुद्ध, ईसामसीह, राजाराम मोहनराय, झांसी की रानी, सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, जेम्सवाट, ध्यानचन्द, सचिन तेन्दुलकर, विश्वनाथन आनन्द आदि सभी अपने जमाने का शीर्ष रहे। ऐसे कहाँ तक नाम गिनाये जिन्हों ने अपनी सफलता का परचम नीले आसमान तक फैलाया, कारण? विराट इरादें, अदम्य

साहस, प्रबल पुरुषार्थ की ललक, दृष्टि में लक्ष्य की चमक, बुलंद हौंसलें, सितारों को छूने की तमन्ना, आसमान पर चढ़ने का हौसला, तूफानों का रूख मोड़ देने की क्षमता, खतरों से खेलने की हिम्मत, सागर को थाह लेने की अटूट ललक, मंजिल को प्राप्त करने का जज्बा, कुछ कर दिखाने का अविरल प्रयास, कठोर परिश्रम, मर मिटने का जुनून, परीक्षाओं का आह्वान आदि अनेकों विशेषताओं से वह सम्पन्न है और ये सभी विशेषतायें उसमें पर्याप्त मात्रा में होती है जिसके कारण युवा वर्ग सदा चोटी पर फतह कर लेता है एवं सफलता की बुलंदी को सहज हासिल कर लेता है अर्थात वो जो चाहे सो कर सकता है।

5– संसार में हर कार्य के लिए यहाँ युवा ही ढूँढा जाता है, युवाकाल जीवन का वह स्वर्णिम काल है जिसमें हर प्रकार की सहज सफलता सहज प्राप्त की जा सकती है इसीलिए ही हर जगह युवाओं की माँग 100 प्रतिशत रहती है। मजदूर से लेकर नेता तक, फैक्ट्री से लेकर कृषि तक, नौकरी, बिजनेस, राजनीति से लेकर धर्मनीति तक, गवर्मेन्ट से लेकर भगवान तक, हरेक की तलाश युवा पर ही जाती है। गवर्मेन्ट भी 18 से 35 वर्ष आयु सीमा रखती है, भगवान भी जब विश्व परिवर्तन के लिए धरा पर अवतरित होता है तो स्वयं तो वह गुप्त है इसलिए सारे कारोबार की बागडोर युवाओं को थमायी, भगवान ने उनकी क्षमता का आंकलन करके ही दिया होगा। सेना में तो युवाकाल के बाद सेना छुट्टी ही कर देती है। युवा जीवन सफलता की सीढ़ी चढ़कर चोटी पर पहुँचता है व पहुँच सकता है पर चोटी पर कायम रहने के लिए एक पेड़ की तरह अपनी जड़ों को मजबूत रखना होगा नहीं तो थोड़ा सा भी ध्यान इधर उधर हुआ अटेन्शन हटा, डगमग हुए तो सीधे नीचे।

6– युवा काल एक ऐसे चौराहे के समान भी होता है जिसको समझकर पार कर लें, तो निष्कंटक, निर्विरोध गतिशील जीवन अपने लक्ष्य की ओर अनवरत बढ़ता जाता है। जिस प्रकार दीपक को जाग्रत रखने के लिए उसे तूफान से बचाकर रखना होता है- दूसरा घृत का भी ख्याल रखना होगा। इसी युवाकाल में मुख्यतः सात अवरोध आकर्षण के रूप में आते हैं जो न चाहते हुए युवा को खींच कर ले जाते हैं, ये सात माया के रूप युवा काल में ही फंसाने के लिए आते हैं न बच्चों में न वृद्धों को ही ये मायावी रूप आते हैं। इसलिए भाइयों कैसे भी करके इन्हें पहचान कर इनसे बचना ही होगा नहीं तो धीरे-धीरे वह लक्ष्य की ओर ले जाने वाले पथ पर एक विशाल अवरोध बन कर खड़े हो जाते है। अवरोध भी इतने बड़े कि फिर मन वह रास्ता बदलने को सोचने लगता है। पहले तो वह आकर्षण सुखदाई लगता है, लेकिन यह सब मृगतृष्णा समान दुख जनित बीज होता है। जो सीधे दुःखों के सागर में डुबोता है या फिर समस्याओं के पहाड़ के नीचे दबाता है। मानो मुश्किलों एवं उलझनों की खाई में धकेलता है या दिलशिकस्ती या हीन भावना के दलदल में धंसाता है । या तो आवेश या आवेग की ज्वाला भड़काता है या पश्चाताप व चिन्ता की अग्नि मे जलाता है। इसलिए भाइयों यह जो स्वर्णिम अवसर नियति व जगतनियंता के सहयोग से आपको मिला हुआ है उसे 20 नाखूनों की ताकत लगाकर उसे न सिर्फ अपना भाग्य बनाना है बल्कि अनेक बहकते कदमों का सजग सहारा बन उन्हें भारत का भविष्य दिखाना है। अनेक दुखी गरीब मजबूरों का मजबूत आधार बन उनके भी भाग्य के दरवाजे खोल देना है। मानव सहित प्रकृति के नवीनी करण अर्थात परिवर्तन के निनित्त बन स्वर्णिम संसार बनाने में जगत नियन्ता का मददगार बनना है। जिन सात बातों से

आप अपने को बचायें उसमें सबसे पहले है—

1) कुसंग – भाइयों इस मायावी रूप को पहचानने में सबसे अधिक धोखा होता है क्योंकि इसकी शुरुवात संग से होती है। पर यह कुसंग कब बन जाता है कुछ पता नहीं पड़ता, इसलिए पहले ही सावधान रहो तो सबसे अच्छा। इसमें खास अपोजिट साइड का संग कभी भी नहीं करना चाहिए यह एक ऐसी मीठी तलवार है जो सारे पुण्य काटकर रख देती है जिसके लिए कहावत है कि संग तारे -कुसंग बोरे। बुराइयों की जड़ कुसंग सें ही होती है। इसलिए मेरे युवा भाइयों जिसका साथ पाने के लिए लोगों ने अपना राजाई छोड़ी, तख्त छोड़ दिया, सारे सुख सुविधाओं का त्याग कर वन गमन किया फिरभी उसका साथ नहीं मिला, जिसको साथी बनाने कि लिए लोगों ने अनेंक हठ-तप-जप किये पर उसका साथ न मिला। और जब आपको उसका साथ मिला तो अब सिर्फ और सिर्फ उसका साथ करना चाहिए। बाकी का साथ भले करें पर साथी न बनायें, न बनें। सम्बन्ध निभायें पर बन्धन न पालें। यही आकर्षण दूसरे आकर्षण का जन्मदाता है।

2) व्यसन – व्यसन कोई भी हो, सभी दुखदाई ही हैं यह बुराई एक ऐसी कैंची है जो न सिर्फ सम्बन्धों की गरिमा को काट कर रख देती है बल्कि हमारी बुद्धि की शक्ति को भी काट कर रख देती है। खासकर निर्णय व परख शक्ति को। व्यसन की शुरुवात खुशी की तलाश में होती है पर जीवन पर्यन्त व्यसनी खुशी की ही तलाश में भटकता रहता है। खुशी की परछाई भी उससे कोसों दूर रहती है। मेरे भाइयों क्या तुम व्यसनों को परख पाओगे अगर नहीं तो अपने सामने ब्रह्माबाप की जीवन को खोलकर कहीं से भी देख लो। पता पड़ जायेगा हमें जीवन में क्या-क्या करना है व क्या-क्या नहीं करना है। यही आकर्षण तीसरी बुराई के निमित्त बनता है।

3) आधुनिकता – अगर हम इसको फैशन का नाम दें तो ज्यादा ठीक लगेगा। आधुनिक जमाने का हवाला देकर बनावटी पन का नकली आवरण ओढ़कर अपने को स्मार्ट दिखाने की मंसा भले खुद को सन्तुष्टि प्रदान करती हो पर तब तक ही जब तक आप अपनी वाणी को विराम लगाये हुए हैं वाह्य पर्सनैलिटी तभी तक प्रभावशाली है जब तक आप चुप हैं। गांधी जी की सुन्दरता जग जाहिर है मदर टेरेसा जैसी सुंदरता तो सारी दुनियां में अभी तक किसी को नहीं मिली और इन दोनों की सुन्दरता ने अनेक लोगों को भी सुन्दर बनाया और इनकी सुन्दरता जीवन के अन्तिम पड़ाव तक निखरती गयी, चाहे मुंह में दांत नहीं थे वा सिर के बाल सफेद थे या चेहरे पर झुर्रियां थी भले ही उन्हें विश्व सुन्दरी का खिताब न मिला हो पर उनकी सुन्दरता आज भी सभी लोगों के मानस पटल पर अंकित है। मेरे भाइयों फैशन एक ऐसा कुआं है जिसमें खुद तो गिरते ही हैं दूसरो ं को भी गिराने के निमित्त बनते हैं। किसी भी उल्टी चाल का अनुसरण करना यह बुद्धि हीनता का ही प्रतीक है। धारा से अलग चलने की हिम्मत जिनमें नहीं होती वही फैशन का अनुयायी बनता है। देखो मेरे भाई नहर के लिए रास्ता बनाया जाता है और तालाब खोदे जाते हैं, और नदी अपना रास्ता खुद बनाती है और सागर भी स्वतः बने होते हैं इसलिए जो महिमा नदी व सागर की है वह नहर व तालाब की कभी भी नहीं होती। फैशन एक शारीरिक आकर्षण है जो सिर्फ विकार ही पैदा करता है। और अगर इसमें फंसे तो फैशन का फंदा श्रेष्ठ जीवन के लिए फांसी का फंदा बन जायेगा। यह विलासिता पूर्ण जीवन भोगी जीवन कहलाता है। इसलिए इससे सदा खबरदार रहो।

4) ख्याली ख्वाब– जिसको हम कोरी कल्पना भी कह सकते हैं यथार्थ के धरातल पर वही सफल है जिसने प्लान प्रैक्टिकल में लाना सीखा है। ख्वाबों की उड़ानें क्षण भरमें ही धरासायी होती हैं वर्तमान में जीना सीखें , भविष्य का भविष्य में देखें। जैसे जो सामने हैं उसे अच्छे से अच्छा करना है वर्तमान भविष्य की दिशा तय करता है। सिर्फ सोचने से कुछ नहीं होता, जैसे मूर्तियां कम्पलीट तैयार तो फुटपाथ पर या मूर्तिकार के घर पर भी रखी होती हैं पर जब तब वह मन्दिर में प्रस्थापित नहीं होती तब तक उनकी वैल्यू सिर्फ एक पत्थर के समान ही रहती है। मन्दिर में प्रस्थापित होने पर ही उनकी पूजा होती है व देव-देवी की उपाधि से उन्हें विभूषित किया जाता है वा उनमें दूसरों की मनोकामना पूर्ण करने की समर्थी मानी जाती है। ठीक इसी प्रकार जब तक प्लैन को दृढ़ता के साथ प्रैक्टिकल में लाने का पुरुषार्थ नहीं करते तब तक वह ख्याली ख्वाब सिर्फ ख्याली सुख दे पायेगे और समय भी हाथ से निकल जायेगा। चांस भी चला जायेगा। इसके कारण ही पांचवां आकर्षण पैदा होता है।

5) निगेटिविटी– इसमें हम व्यर्थ को भी एड कर देते हैं। व्यर्थ उल्झा हुआ रास्ता है तो निगेटिविटी उल्टा रास्ता है। जाना पूर्व में है चल रहे हैं पश्चिम में...

और पश्चिम रास्ता का ढूँढ रहे तो लक्ष्य कब मिलेगा भगवान ही मालिक। व्यर्थ अवरोध पैदा करता है पर निगेटिव भटकने व लुढ़कने का पथ है जिस पर चलकर की हुई प्राप्तियां भी खत्म हो जाती हैं। व्यर्थ स्पीड ब्रेकर हैं तो निगेटिव पथ को ही ब्रेक करने वाली है जिससे टोटल रास्ता ही चेन्ज हो जाता है। जैसे शुद्ध दूध में एक चुटकी नमक डाल दें। यह निगेटिविटी सफलता के लिए दुश्मन की तरह है इसलिए हे सफलता के सितारों तुम्हें इसके चंगुल से बचना होगा। निगेटिविटी ही छठे नम्बर की बुराई का कारण बनती है।

6) ईर्ष्या – यह ईर्ष्या एक ऐसी आग है जो शरीर और मन को एक साथ जलाती है, मन की शक्तियों को खाक कर उसमें अहं का जहर भर देती है। जिसका धुआं सामने वाले को न सिर्फ मुंझाता है बल्कि उसे जलाता भी है। ईर्ष्यालू अपना फायदा नहीं देखता सामने वाले का घाटा कितना हुआ इसमें उसको दिली सुकून मिलता है। जिसके आगे दुनियां का हर सुख फीका है। हम कैसे भी हों सामने वाला हमसे अच्छा न हो। जैसे बन्दर अपना घर तो बनाता ही नहीं पर चिड़ियों का घर उसे अच्छा नहीं लगता वह उसे पलभर में ही तोड़-फोड़ डालता है जबकि वह उसके रहने के लायक भी नहीं होता। इसी प्रकार गाय जब घास खाती है तो कुत्ते उसके आगे-आगे भौंकते हैं उसे खाने नहीं देते, जबकि घास कुत्तों के खाने की चीज नहीं। ईर्ष्या की अग्नि का झोंका श्रेष्ठ जीवन के पथ का जहर है जो चरित्र रूपी अमृत को एक बूंद से ही बेकार कर देता है। ईर्ष्यालू को जीने का मकसद ईर्ष्या से शुरू होकर ईर्ष्या में ही खत्म हो जाता है वह कभी भी शान्ति का अनुभव नहीं कर सकता। अपने साथ-साथ अनेको का जीवन बर्बाद हो जाता है। इस बुराई का प्रखर व विकराल रूप ही अगली बुराई है।

7) मद – रोब, जोश, जिद्द यह सब रूप इसी (मद) की निशानी हैं। रावण के पास ज्ञान, बुद्धि, शक्ति, भक्ति सब कुछ पर्याप्त मात्रा में माना गया है पर अहम् के कारण ही असुर कहलाया। सबकी घृणा का पात्र बना और विनाश को प्राप्त हुआ। ऐसा दिखाया गया है। इसी प्रकार सारी शक्तियां

विशेषतायें व प्राप्तियां नष्ट करने का कारण यह मद ही बनता है। यह एक ऐसे पहाड़ की चोटी से गिरने के समान है जहां से गिरने के बाद फिर कहीं से भी सलामत नहीं बचते। मद का आधार लेकर व्यक्ति सफलता की बुलन्दियों को छूने के बजाये बदनामियों व बद्‌दुआओं की बुलन्दियां अवश्य छू लेता है। छू क्या लेता है काबिज ही हो जाता है, शराब का नशा तो थोड़े समय के बाद फिर भी उतर जाता है, पर मद का नशा तो सदा चढ़ा रहता है व निरंतर बढ़ता ही जाता है। जिस नशे से मन मलीन, बुद्धि विहीन, स्वभाव चिड़चिड़ा संस्कार कट्टर,वृत्ति दूषित, दृष्टि कलुषित, स्मृति कमजोर, भावना अशुभ, भाव कटु, बोल जहरीले और कर्म विकर्म बनते चले जाते हैं। जिससे हर व्यक्ति दूर-दूर रहने लगता है। जिसके कारण ऋषि भले बने हों पर दुर्वासा ऋषि के समान ही रहते हैं। जिससे उनकी विषेशता व गुणों की प्राप्तियों से किसी को सुख नहीं मिलता। इन सातों जहरीले सांपों के जहर के आत्मा के सभी गुणों का ह्रास होता है। माया ने सभी गुणों को नष्ट करने के लिए अलग-अलग अपने तीर चलाये हैं।

भाइयों क्या तुम्हें पता है – कुसंग के आत्मा की पवित्रता रूपी शक्ति का ह्रास होता है। व्यसन से शक्ति का पतन, आधुनिकता से आनन्द नष्ट होता है। मद से ज्ञान खत्म होता है। ईर्ष्या से प्रेम, निगेटिविटी से शान्ति, और ख्याली ख्वाब सुख ले जाते हैं। अब इन सातों को नष्ट करने के लिए परमात्मा के सात तीरों का उपयोग करो तो विजय तुमसे दूर कभी नहीं जा सकती।

वह सात शस्त्र हैं—

1. कड़ी मेहनत - इसका कोई सब्सीट्यूट नहीं होता, मेहनत का कोई विकल्प नहीं, मेहनत वाला कभी-भी दास नहीं उदास नहीं, भूखा नहीं किसी के उपहास से नहीं डरता, कभी सिर झुकाकर नहीं चलता। हर मंजिल का अधिकारी बनता। इसलिए भाईयों कभी भी कामचोर न बनो। कुछ बनने के लिए कड़ी मेहनत करना ही होगा। चींटी कभी थकती नहीं इतने छोटे जीव के जितना भी क्या अक्ल तुम्हारे पास नहीं होगी ?

2- सतत प्रयास – करत-करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान रसरी आवत जात है सिलपर पड़त निशान, क्या तुमने नहीं सुना ? कच्ची मिट्टी का घड़ा भी पक्के फर्श को घिस देता है बार-बार रखने से, इसलिए भाइयों जब तक रहना है अभ्यास जारी रखना है, हार हर बार कुछ नया सिखाती है, हार हार नहीं बल्कि एक नया रास्ता ढूंढ़ने का चांस है इसलिए कभी रूको नहीं, पीछे लौटने के रास्ते सारे बन्द कर दो तुम्हें सिर्फ आगे बढ़ना है।

3) अटूट हिम्मत – ये भगवान का वादा है तुम एक भी कदम हिम्मत का बढ़ाओगे वह सौ कदम आपको आगे बढ़ायेगा। इसलिए हिम्मत की डोर कभी भी टूटने न पाये, अगर हिम्मत नहीं तो मरने के पहले न जाने कितने बार रोज मरते रहेंगे, ऐसा जीवन भी क्या जीवन है। क्या नचिकेता प्रह्लाद की हिम्मत तुमने नहीं सुनी ? कान्तिकारियों की हिम्मत क्या तुमने कहीं नहीं पढ़ी ? विवेकानन्द की हिम्मत की गाथा क्या तुमको नहीं पता ? फिर तुम्हारे साथ तो सर्वशक्तिवान है तुम्हें हिम्मत के साथ सदा सफलता को प्राप्त करना ही है।

4) आत्मचिन्तन – परचिन्तन पतन की जड़ है यह भगवान ने कहा है, आत्मावलोकन उतना ही जरूरी जितना जरूरी एक्सीडेन्ट होने पर एक्सरे की। दूसरों के चिन्तन में समय बर्बाद कर उनकी

कमियों को भी अपने मन में शरण देने के बजाये आत्मचिन्तन कर अपनी कमियों को दूर भगाना ही बुद्धिमानों की पहचान है। तुम्हें मक्खी नहीं मधुमक्खी बनना है।

5) अनवरत साधना– संस्कार परिवर्तन करना पहाड़ हटाने से भी मुश्किल कार्य है। इसके लिए चाहिए अनवरत व कठिन साधना। 2500वर्ष के विकारों के बन्धनों को काटना व आधाकल्प के संस्कारों को मोड़ना आसान कार्य नहीं है पर प्रज्वलित अग्नि बड़े व कड़े लोहे को भी पिघलाकर पानी जैसा तरल बना देती है। ऋषि मुनियों ने विकारों को जीतने के लिए अनेक उपाय किये पर सफल नहीं हुए क्योंकि विधि सही नहीं थी इसलिए सिद्धि की प्राप्ति नहीं परन्तु बाबा ने जो विधि बतायी है उस साधना में अनवरत लगना ही होगा। हर मुश्किल को पार करने का उपाय है अनवरत साधना।

6) सच्चा दिल – सच्चे दिल पर साहेब राजी। भाइयों जिन्दगी में कुछ सीखो या न सीखो पर सच्चाई जरूरी सीख लेना, सच्चे दिलवाला ही भगवान के दिल पर राज कर सकता है जो दिल पर है वही अधिकारी बनता है। सच्चाई सदा शुद्ध बनाती है, सच्चाई सदा पवित्रता के नजदीक लाती है। सुख के सागर को अपना बनाने के लिए सच्चाई को साथी बनाना ही होगा। सच्चाई का आदि-मध्य-अन्त रूप खुशियां बरसाने वाला ही होगा व निश्चिन्तता प्रदान कराने वाला ही होगा। इसलिए युवा भाइयों सच तो बिठो नच सच्चे बनो अच्छे बनों, पक्के बनो।

7) उद्देश्य पूर्ण जीवन – भाइयों तुम कह सकते हो कि बिना उद्देश्य के कोई नहीं जीता हमारा कहने का भावार्थ है कि पैसा कमाना कोई पद प्राप्त कर लेना , कुछ डिग्रियां ले लेना, कुछ मकान बना लेना, सुख के साधन इकट्ठा कर लेना, कोई प्याऊ खोल देना, थोड़ा-सा अनाज बंटवा देना, या कुछ कम्बल बंटवा देना, मात्र ये उद्देश्य जीवन के उद्देश्य बना लेना, कहाँ की समझदारी है यह तो सब आपके शरीर नष्ट होते ही खत्म हो जायेंगे। असली उद्देश्य तो वह हैं जो शरीर छोड़ने के बाद कार्य जहां समाप्त किया था वहीं से आगे की शुरुवात हो। मेरे भाइयों कहीं आपका भी तो ऐसा ही तो लक्ष्य नहीं है ? पैसे के साथ सन्तुष्टता रूपी धन कमाना भी उद्देश्य हो, पद के साथ स्वमान का भी नशा हो, डिग्रियों के साथ गुणों की गहराई भी हो, मकान-दुकान साधन के साथ मन का ठिकाना, स्थाई घर, ज्ञान का भण्डार दान करने के लिए पर्याप्त, साधनों के साथ साधना, सोशल सर्विस के साथ शुभ भावनाओं का दान व खुशी का दान करने का वा सबको भगवान का बच्चा बनाकर उसके वर्से का अधिकारी बना देना आधा कल्प के लिए सुख शान्ति, स्वास्थ्य अविनाशी प्राप्त करवाने का लक्ष्य हो। भाइयों ये सब कार्य इसी युवा काल में ही कर सकते हैं। क्या तुम्हें यह जागृति है, अगर नहीं तो अब सचेत हो जाइये कहीं माया आकर अपना वर्चस्व न कायम कर ले। स्वर्णिम संसार जब तक नहीं आ जाता तब तक इस युवा काल को समाप्त नहीं करना है। ओमशान्ति।

बी.के. सुमन अलीगंज, लखनऊ